फतेहपुर–सीकरी : एक ऐतिहासिक अनुशीलन

संतोष कुमार दुबे,
सहायक प्राध्यापक इतिहास
शास. महाविद्यालय बरगवॉ,
जिला सिंगरौली (म.प्र.),

अपर्णा पाण्डेय, सत्यव्रत तारन,
शोधार्थी इतिहास,
अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

प्रस्तावना –

फतेहपुर–सीकरी – फतह शब्द से विवृत हुआ है फतह अर्थात् विजय, अत: मुगल बादशाहों ने अपने विजय की यादगार में इसका नामकरण किया था। तथापि ध्यातव्य हो कि बारहवी सती ई. के दौरान 'सीकरी' गॉव सिकरवार राजपूतों के अधीन था। दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद तेरहवीं ई. में यहॉ तुर्को का शासन हुआ। सीकरी गॉव के पास स्थित खिल्जी और तुगलक के अभिलिखित मस्जिद और मकबरे इसकी प्राचीनता एवं महत्ता को दर्शाते हैं। फतेहपुर सीकरी आगरा के पश्चिम दिशा में लगभग ३७ किलोमीटर दूर स्थित है। इसके अवशेष एक सूखे हुए झील के तट के साथ–साथ लगभग चार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हुए हैं।

अकबर क्रीड़ा एवं शिकार के उद्देश्य से सीकरी के आस–पास के क्षेत्रों में जाया करता था और इसी दौर में सन् १५६४ में उसने 'किरावली' वर्तमान ककरौली में एक क्रीड़ा स्थल का निर्माण करवाया था, जिसका नाम 'नगरचैन' रखा जो फतेहपुर–सीकरी से बहुत दूर नहीं था। सन १५६५ ई० में आगरा किला के निर्माण के दौरान सीकरी पहाड़ी को उत्खनित किया गया तथा उत्तम प्रकार का लाल बलुआ पत्थर प्राप्त हुआ। उत्खनन प्रक्रिया के दौरान पहाड़ी पर शेख सलीम चिस्ती के निवास के आस–पास 'पत्थरकटे' निवास करने लगे। यहॉ चिस्ती के सम्मान में एक मस्जिद का निर्माण किया गया, जो फतेहपुर सीकरी में मुगलों द्वारा निर्माण कार्य का प्रथम उदाहरण है। सौभाग्यवश फतेहपुर सीकरी की अधिकांश इमारतें एवं वह नगर जो प्रारम्भिक मुगलों के स्थापत्य समूह के विस्तार को दर्शाता है, सुदृढ अवस्था में है। यहॉ का नगरीकरण मुगल शहर के नियोजन को समझने हेतु आधार प्रदान करता है।

ऐतिहासिक विश्लेषण –

सन् १५६९ ई० में अकबर अपनी पटरानी जोधाबाई, जो आमेर के हिन्दू राजा की पुत्री थी, से सीकरी में शेख सलीम चिस्ती की 'खरकाह' में निवास करने को कहा। यहॉ पर उसने ३० अगस्त, १५६९ में राजकुमार मोहम्मद सलीम मिर्जा को जन्म दिया। यह अकबर का उत्तराधिकारी था, जिसने बादशाह जहॉगीर के नाम से शासन किया। सलीम के जन्म के पश्चात् ही यहीं पर जोधाबाई को 'मरियम उज्जमानी' की उपाधि दी गयी। यद्यपि अकबर के नये शहर सीकरी का निर्माण सिर्फ सुखद घटना को यादगार बनाना ही न था अपितु बारहवीं शदी में मुइनुद्दीन चिस्ती द्वारा लाया गया सूफीवाद के प्रति आस्था प्रकट करना भी था, किन्तु इस परियोजना पर कार्य अगले दो वर्ष तक प्रारम्भ नहीं हो सका। मोहम्मद आरिफ कन्धारी के अनुसार अगस्त–सितम्बर १५७१ ई. तक अर्थात राजकुमार सलीम के दूसरे जन्म दिन के कुछ समय पश्चात् तक जो कि सीकरी में शेख सलीम चिस्ती की खनकाह पर बनाया गया था, तत्कालीन मुगल राजधानी आगरा से कोई राजाज्ञा निर्माण हेतु जारी नहीं हुई थी। नई राजधानी का नाम 'फतेहाबाद' रखा गया। यह नगर शीघ्र ही 'फतेहपुर' के नाम से विख्यात हुआ। कंधारी तरीख–ए–अकबरी

में इसके प्राचीन नाम का उल्लेख करता है। जहांगीर के संस्मरण इस तथ्य को पुख्ता करती है कि यह नगर सीकरी के रूप में अकबर की गुजरात विजय (१५७३) के पश्चात ही जाना गया। तद्पोरान्त फतेहपुर इसके मूल नाम सीकरी के साथ जुड़कर 'फतेहपुर–सीकरी' के नाम से विख्यात हुआ। इस शहर के चारो ओर उत्तर–पश्चिम दिशा को छोड़कर जहॉ झील का किनारा था लगभग ११३ किलोमीटर की लम्बाई में एक सुदृढ़ पाषाण की दीवाल अर्थात रक्षा प्राचीर निर्मित की गयी। अधिकतम शाही निर्माण लाल बलुए पत्थर से पहाड़ी के शिखर पर किया गया। जहॉ पर विशाल जामा मस्जिद और वैसे ही शानदार महल बनायें गये है। शेख सलीम चिस्ती के मकबरा के अतिरिक्त समस्त भवन लाला बलुआ पत्थर से निर्मित है।

शेख सलीम चिस्ती के संबंधियों एवं पुत्रों की सहायता से निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। जबकि चिस्ती का स्वर्गवास १५७२ ई. को हो गया था। इस दौरान निर्माण कार्य प्रगति पर था। बाजार स्थल का निर्माण सन १५७६–७७ ई० में राजभवन के नीचे आगरा–दरवाजा के तरफ किया गया।

५ सितम्बर १५८५ ई. को राजधानी बसने के पन्द्रह वर्ष पूर्ण होने के पूर्व ही अकबर फतेहपुर–सीकरी से लाहौर को चल पड़ा। तत्कालीन साक्ष्यों से यह प्रतीत होता है कि अकबर के भाई मिर्जा हाकिम मोहम्मद जो काबुल का गवर्नर था, की असामयिक मृत्यु और उत्तर–पश्चिम में उत्पन्न अनेक राजनीतिक एवं सैनिक समस्याओं के चलते अकबर ने इस स्थान का परित्याग किया। अबुल फजल विवृत करता है कि जब अकबर शीघ्र ही विद्रोहों को कुचलने एवं सीमान्त प्रदोशों को विजित करने के पश्चात पंजाब से फतेहपुर–सीकरी नहीं आया तो उसके अनुयायियों को महान आश्चर्य हुआ।

फतेहपुर–सीकरी का इतिहास मात्र इन पन्द्रह वर्षो में ही सीमित नहीं है जिस समय अकबर उन भव्य इमारतों में रहा। उसके पूर्व तेरहवी सती के प्रारम्भ में यहॉ पर मुसलमान बस गये तथा चौदीहवीं–पन्द्रहवी सती में यहॉ पर विभिन्न प्रकार की इमारते जिनमें मस्जिद एवं मकबरे सम्मिलित थे, पुराने सीकरी कस्बे के निकट बसने लगे, जिसे आज 'नगर' के रूप में जाना जाता है। बाबर जो पहला मुगल शासक एवं अकबर का दादा था, ने मेवाड़ के सर्वाधिक शक्तिशाली एवं राजनीतिक नरेश को 'खानवा' के युद्ध में विजित किया, इस जीत से वह अतिप्रसन्न था क्योंकि इससे एक वर्ष पूर्व उसने उतने ही महत्वपूर्ण युद्ध में सुल्तान इब्राहीम लोदी से 'पानीपत' के मैदान में विजय प्राप्त की थी। अत: उसने सीकरी का नाम 'शुक्र' रखा। परन्तु यह किसी भी साक्ष्य से स्पष्ट नहीं है कि यह नया नाम जनप्रिय अथवा साहित्यिक प्रयोग में क्यों नहीं लाया गया। तत्पश्चात बाबर ने उसी वर्ष सीकरी में एक 'विजय उद्यान' का निर्माण करवाया, जिसका निर्माण एक वर्ष तक चला। किन्तु उस समय का कोई भी उद्यान अवशेष एवं भवनावशेष उपलब्ध नहीं होते हैं। मात्र एक अभिलिखित 'कुँआ' प्राप्त होता है जो बाबर के अधीनस्थ एवं उसके द्वारा निर्मित नगर का प्रमाण देता है।

बाबर की मृत्यु के तीन साल बाद सीकरी तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्र 'बयाना' का 'कर' आगरा में उसे प्रथम मकबरा निर्माण हेतु 'वक्फ' को स्वीकृत किया गया, ज्ञातव्य हो कि बाबर को बाद में काबुल में समाधिस्थ किया। फतेहपुर–सीकर में शेरशाह सूरी ने हुमायूं को बाबर द्वारा बनवाये हुए उद्यान में बन्दी बनाया गया, जहॉ से हुमायूं कुछ समय के लिए ईरान चला गया। यह घटना प्रमाणित करती है कि मुगलों का संबंध यहॉ से बाद के वर्षो में भी रहा।

सन् १५८५ ई. में अकबर के उत्तर–पश्चिम में चले जाने के पश्चात तथा उसके उत्तराधिकारी जहॉगीर और शाहजहॉ के शासन काल में फतेहपुर–सीकरी महत्वपूर्ण यात्रियों के मेहमान नवाजी का ही

प्रमुख नहीं था, बल्कि बड़ी संख्या में यहाँ पर स्थायी निवास भी होता रहा है। जहाँगीर की माँ हमीदाबानू बेगम जो 'मरियम मकानी' के नाम से भी जानी जाती थी – ने अपने जीवन का अधिकांश समय अर्थात सन १६०१ ई० में मृत्यु होने तक यहीं व्यतीत किया। जहाँगीर उल्लेख करता है कि ''वह सन् १६१९ ई० में वहाँ पहुंचा तो उसकी माँ 'मरियम जज्मानी' बहुत कमजोर हो चुकी थी, इनको छोड़कर समस्त बेगमें, महल के अन्य सभी सदस्य एवं कर्मचारी उससे मिलने आये।

जहांगीर एवं शाहजहाँ का एक इतिहासकार मोहम्मद सलीह काम्बू के आदेश पर वार्षिक घटना के अवसर पर फतेहपुर सीकरी के भवनों को भव्यतापूर्वक सजाने–संवारने का प्रमाण उपलबध है। इससे ज्ञात होता है कि यह शहर बड़े–बड़े उत्सव मनाने का शाही अथवा शासकीय महत्व प्राप्त कर चुका था। जहाँगीर के शासनकाल में शाहजहाँ अक्सर इस क्षेत्र के जंगलों में शिकार करने एवं सफेद संगमरमर की बनी शेख सलीम चिस्ती की दरगाह पर प्रार्थना करने आया करता था।

तत्कालीन शासन के दौरान बहुत से यूरोपियन आगरे–दिल्ली में मुगलों के साथ व्यापार हेतु आते थे, उन सभी ने फतेहपुर–सीकरी की यात्रा की थी। कुछ व्यापारी सम्भवत: उस क्षेत्र मे उच्च प्रजाति के बैगनों का व्यापार करने के उपक्रम में यहाँ आते थे। औरंगजेब (१६५८–१७०७ ई०) के साम्राज्य में फतेहपुर–सीकरी ने शाही केन्द्र होने की गरिमा खो दी, क्योंकि उसकी रुचि दक्षिण भारत में अधिक थी।

फतेहपुर सीकरी का साम्रज्य आगरा से लेकर पश्चिम में अजमेर तक लगभग ४५० किलोमीटर की दूरी तक विस्तृत था, जिसे हम तत्कालीन समय का मेट्रोपोलिटिन केन्द्र कह सकते हैं। सन १५६१ ई० से अकबर इसी मार्ग से अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दी चिस्ती की दरगाह की प्रतिवर्ष तीर्थयात्रा करता था। सन १५७४–७५ ई. में उसने आगरा–अजमेर मार्ग पर प्रतिकोस लगभग १.६ कि०मी० पर कोस मीनार बनाने तथा प्रत्येक कोस पर 'आरामगाह' निर्माण करने का आदेश किया।

कन्धारी के अनुसार आगरा से अजमेर तक के मार्ग पर तम्बू शिविर लगाये गये थे, इसके दो कारण हैं प्रथमत: अकबर के सम्मान में एवं द्वितीय जब अकबर मुइनुद्दीन चिस्ती की दरगाह के पवित्र दर्शन करने जाये तो उसे साथ में तम्बू न ले जाना पड़े।

इस नगर नियोजन के संदर्भ में अकबर का कितना मौलिक विचार है और कितना स्थानीय परम्पराओं को विस्तार दिया गया है तथा शहर के नियोजन में हिन्दुस्तान के नगर जिनके विषय में अकबर का स्वयं का अनुभव था और विदेशी शहर जिनका अनुभव मुगलों की स्मृति में था, का क्या प्रभाव पड़ा? अकबर भवन निर्माण के समय में हिन्दुस्तान के बड़े–बड़े शहरों से भी परिचित था। यथा –

अहमदाबाद, जौनपुर, लाहौर, माण्डू, रणथम्भौर, चित्तौड़ आदि प्रमुख हैं। इनमें आगरा एवं दिल्ली के शहर भी सम्मिलित हैं, जहाँ पर बाबर और हुमायूं के द्वारा पहले ही उचित योगदान किया गया था। हिन्दुस्तान से बाहर के विषय में काबुल, कान्धार में वह बचपन में रहा था।

वास्तु–सौन्दर्य –

माण्डू की गढ़ी (किला) जिसका निर्माण मालवा के नये स्वतंत्र सुल्तानों द्वारा १५वीं शताब्दी के प्रारम्भ में किया गया तथा मेवाड़ के राजपूत राणाओं द्वारा सदियों पहले निर्मित चित्तौड़ के किले की विशेषताएँ फतेहपुर–सीकरी के भवन–निर्माण में उपस्थित है। तथापि यह पहचान करना कठिन है कि फतेहपुर–सीकरी का मॉडल किस विशेष नगर से लिया गया है। साथ ही यह भी कहना मुश्किल है कि इमारतों की वास्तुकला कहाँ से अपनायी गयी है? भारत के संबंध में यहाँ की लगभग सभी इमारतें प्रारम्भिक मुगल की विशेषताएँ रखती हैं, जिनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य छत और द्वार को बनाने में

मेहराब के बजाए सरदल का प्रयोग किया गया है। यहाँ के अलंकरणों की अधिकता मुख्य रूप से निर्माण के 'ट्राबीट' प्रणाली का अनुकरण करती है। अत: कहा जाता है कि यह सीधे तौर पर हिन्दू श्रोतों से ली गयी है। उदाहरणार्थ ग्वालियर के किला का अलंकरण १६वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में निर्मित हुआ था।

अकबर के पूर्वजों द्वारा इस्लामिक वास्तुशास्त्र की एक विशिष्ट शैली भारत में विकसित की गयी। यद्यपि उन्होंने सदैव इसका अनुकरण नहीं किया। जैसे – बाबर द्वारा एक मस्जिद आगरा में हिन्दुस्तानी शैली में निर्मित की गयी थी। हुमायूं ने हिन्दू शैली का अनुकरण करते हुए 'सरपरदा' (जालीदार) का उपयोग किया है। आइन–ए–अकबरी से भी हिन्दू वास्तुकला के प्रयोग की बात प्रमाणित होती है।

अकबरनामा में एक स्थान पर अकबर कहता है कि यहाँ पर कार्य करने वाले कारीगर 'देवलोक' एवं 'पृथ्वीलोक' के हैं। एक रेखाचित्र में अकबर को भवन निर्माण का निरीक्षण करते हुए प्रदर्शित किया गया है। फतेहपुर–सीकरी में एक राजसी ठाट–बाट से राजधानी का निर्माण किया गया। शासक ने स्वयं सीकरी पहाड़ी की चोंटी पर राजधानी निर्मित करने हेतु स्थल का चुनाव किया, जहाँ से एक मनोरम दृश्य दिखाई देता था। निर्माण कार्य को तीव्र गति से चलाने हेतु शासन के कोने–कोने से हजारों मजदूरों, कुशल अभियन्ताओं, दक्ष कारीगरों, मूर्तिकारों पत्थरकटों आदि को आमंत्रित किया गया। निर्माण हेतु लाल बलुआ पत्थर प्रयोग किया गया है जो कि समीपस्थ स्थल 'रूपवास' से लाया गया।

उपसंहार –

फतेहपुर–सीकरी की निर्माण सामग्री के संबंध में अकबर और उसके उत्तराधिकारियों के इतिहास के अतिरिक्त यूरोपियन मिशनरियों, व्यापारियों तथा यात्रियों के द्वारा प्राथमिक श्रोत उपलब्ध होता है, वर्तमान में यही प्राथमिक श्रोत के रूप में इतिहासकारों को प्राप्त होता है।

१९वीं शताब्दी के अन्त में ई. स्मिथ ने इस संदर्भ में पूर्व के ग्रंथों का सहयोग लिया था। सन १५८० ई. में गोवा की प्रथम ईसाई मिशनरी अकबर के निमंत्रण पर फतेहपुर सीकरी में आयी। यह घटना मुगल दरबार में यूरोपियन के आने का प्रथम प्रमाण प्रस्तुत करता है। यहाँ तत्कालीन जन–जीवन के संदर्भ में और अधिक सूचना व जानकारी के द्वारा लिखे गये पत्रों से प्राप्त होती है, जिसे जॉन, कोनिया अफोंसो के द्वारा संकल्पित एवं सम्पादित किया जा चुका है। सन १५८४ ई. में रॉल्फ फिच् ने भी इस प्रमुख नगर का वर्णन किया है। इस तरह का यात्रा विवरण १८वीं शताब्दी से मिलना बन्द हो जाता है। वरन् पुन: १९वीं शती के पूर्वार्द्ध में यूरोपियन यात्रियों के द्वारा पुन: प्राप्त होने लगता है किन्तु इनके द्वारा किया गया उल्लेख भ्रम की स्थिति उत्पन्न करता है, क्योंकि उक्त सूचना व जानकारी, यात्री पथ–प्रदर्शको द्वारा यात्रियों को प्रदान की जाती थी। सन् १८२५ ई. में बिशप हैबर ने यहाँ का भ्रमण किया परन्तु उनका दल अधिकांश इमारतों की पहचान नहीं कर सका था। सन १८५० ई. में 'बशरत अली' ने अपने अन्य साथियों के साथ निरीक्षण कर इमारतों की पहचान कराई। १९वीं शती के अन्त तक यहाँ की जनश्रुतियों को इतिहासकारों द्वारा स्वीकार कर लिया गया।

फतेहपुर–सीकरी के संदर्भ में सम–सामयिक सूचना विपुल मात्रा में प्राप्त नहीं होती है तथा उनकी पारिभाषिक शब्दावली सदैव अनुकूलित नहीं है। इमारतों एवं संबंधित घटनाओं के संदर्भ में विवरण अब्दुल कादिर बदायूंनी की 'मुतखाब–ए–तारीख', अबुल फजल की 'अकबरनामा', आरिफ कन्धारी की 'तारीख–ए–अकबरी', निजामुद्दीन अहमद की 'तबकात–ए–अकबरी' के ऐतिहासिक लेखन में प्रचुर मात्रा मे प्राप्त होता है। वजीद बियात की 'तजकीर–ए–हुमायूं व अकबर' भी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। जहांगीर की जीवन–कथा 'तुजुक–ए–जहांगीर' फतेहपुर–सीकरी मे उसके ठहरने के विषय में विस्तृत

सूचना उपलब्ध कराती है तथा अब्दुल हमीद लाहौरी की 'पादशाहनामा' और मोहम्मद साहिल काम्बू की 'अमल–ए–सलसीह' और शाहजहां द्वारा यहाँ की अधिकांश यात्राओं का वृतान्त पस्तुत करती है।

संदर्भ –

१. सिद्दीकी, डब्ल्यू०एच० – 'फतेहपुर–सीकरी', आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, जनपथ नई दिल्ली, १९९८, पृ. १–२
२. कादिर, मोहम्मद आरिफ, – 'तारीख–ए–अकबरी', १९६२, पृ. १४९–५०
३. अलामी, अबुल फजल – 'अकबरनामा', अनुवादक एच० बेवराइज, १९०२–३९, रिपोर्ट, देलही १७९३, द्वितीय, पृ. ३५०, ५३१
४. जहांगीर, नुरूद्दीन मोहम्मद, 'तुजुक–ए–जहांगीरी, दिल्ली, १९६८, प्रथम, पृ. २,
५. कन्धारी, मोहम्मद आरिफ – 'तारीख–ए–अकबरी', पृ. २३९
६. ब्रांड, माइकल, एण्ड लोवरी, ग्लेन, डी० – फतेहपुर सीकरी, कैम्ब्रिज मेसाचुसेट्स, १९८५, पृ. ३
७. बाबर, जहीरूद्दीन मोहम्मद – 'बाबरनामा', १९२१, रिपोर्ट १९७० पृ. ५३३
८. बेगम, गुलबदन – 'हुमायूंनामा' अनु. ए. एस. बेवराइज, दिल्ली १९७२ पृ. १७०
९. स्मिथ, इडमंड, डब्ल्यू. – दि मुगल आर्किटैक्चर ऑफ फतेहपुर–सीकरी, वाल्यूम ४, इलाहाबाद १८९४–९७